तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : १०
जनवरी २००१

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - १०, जनवरी २००१

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - **Editor : Titthayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	प्रजातन्त्र - महावीर	-	लता बोथरा	
२.	कर्म की कहानी	-	पन्यास प्रवर सुयश मुनिजी	
३.	मलयासुन्दरी चरित्र			

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 218 6084

प्रजातन्त्र - महावीर

पूर्वानुवृत्ति

यहाँ लॉक पर हम **Sophist** विचार धारा की छाप पाते हैं। लॉक के समय में इग्लैण्ड में "शानदार क्रान्ति" **Glorious Revolution** हुआ और वहाँ का निरंकुश अत्याचारी शासक **James II** फ्राँस भाग गया तथा राज्य की प्रभुसत्ता संसद में निहित हो गयी। **Bill of rights** के अन्तर्गत लॉक के अनुसार मनुष्य बुद्धिमान तथा विचारवान प्राणी है। प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य को **right of Life, Right of liberty & right of poperty** यानि जीवित रहने का अधिकार, स्वतन्त्रता का अधिकार व सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त था। लॉक कहता था कि तुम दूसरों के प्रति वैसा ही वर्ताव करो जिसकी तुम दूसरों से अपने प्रति आशा रखते हो। यह प्राकृतिक नियम उस समय लागू था। अतः प्राकृतिक युग स्वर्ण युग था। लेकिन निश्चित कानून का अभाव, प्राकृतिक नियमों के लागू करने के लिये संस्था ना होने के कारण तथा दण्ड देने के लिये निष्पक्ष सत्ता ना होने से होने वाली असुविधाओं को दूर करने के लिये मनुष्यों ने एक सामाजिक समझौता कर राज्य का निर्माण किया। सब मनुष्यों के समान होने के कारण समाज के सब मनुष्यों ने सब मनुष्यों के साथ अनुबन्ध किया जिसमें व्यक्ति ने केवल प्राकृतिक कानून को लागू करने का तथा उसके उल्लंघन के लिये दण्ड देने का अधिकार सारे समाज को अर्पित कर दिया बाकी अन्य सभी अधिकार उसने नहीं दिये। अतः जो शक्ति समाज को दी गयी वो सीमित थी। इससे सिविल समाज का जन्म हुआ। ये पहला समझौता था, इसके बाद एक दूसरा समझौता हुआ जिसमें शासन स्थापित हुआ। इस प्रकार लॉक की पहली संविदा जनता के बीच हुई जिसमें नागरिक समाज की स्थापना हुई और दूसरी जनता तथा शासन के बीच में हुई जिसके द्वारा एक सीमित और मर्यादित राज्य की स्थापना हुई।

लॉंक की व्यवस्था में प्रत्येक वस्तु व्यक्ति के चारों तरफ चक्कर काटती है—व्यक्ति की सर्वोच्च सत्ता को सब प्रकार से सुरक्षित रखा गया। **"Everything in locks system revolves round the individual, everything is desposed so as to ensure the sovereignty of the individual" ------Vaughan.**

सामाजिक समझौते के सिद्धान्त में तीसरा सबसे महत्वपूर्ण नाम जीन जैक्स रूसो का है **(Jean Jacqueous Rousseau)**। उसकी किताब का नाम **Social contract** है जिसमें उसने **general will** के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। उसकी प्रसिद्ध कहावत **"मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है और सर्वत्र वह जंजीरो में जकड़ा है"** स्वतन्त्रता का सिंहनाद है। **"Man is born free and everywhere he is in Chains"** उसके विचारों पर प्लेटो और लॉंक का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। रूसो का मानव जीवन प्राकृतिक अवस्था में सादा सरल, निष्कपट था ना कलह, ना द्वेष अतः स्वर्ण युग था। प्राकृतिक व्यवस्था आदर्श थी पर यह ज्यादा दिन नही चलीं। मानव में ज्ञान की बुद्धि एवं अग्नि का विकास होने से परिवार आस्तित्व में आये तथा सम्पत्ति बनाने की इच्छा से परस्पर कलह, विद्वेष, हिंसा और युद्ध का प्रादुर्भाव हुआ। इस प्रकार व्यक्तिगत सम्पत्ति ने ही प्राकृतिक अवस्था की शान्ति भंग की और मनुष्य की स्वतन्त्रता परतन्त्रता में बदल गयी तब मनुष्यों ने इस दुःखी वातावरण का अन्त करने के लिये आपस में एक समझौता किया तथा अपने अधिकार किसी व्यक्ति विशेष को न देकर सम्पूर्ण समाज को दिये।

ये समझौता निजी स्वरूप और सामुहिक स्वरूप के बीच में हुआ था। इस सामूहिक स्वरूप का तात्पर्य सार्वजनिक इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन से था जिसे **General will** या सामान्य इच्छा रूसो ने कहा है यहां सम्प्रभुता सामान्य इच्छा में समाहित बतायी गयी है।

A.M. Osborn -- "The doctrine of general will was not only Rousse ah's most original, but it was also his important Contribution to Political Philosophy."

उसका ये सामान्य इच्छा का सिद्धान्त ना केवल राजनैतिक दर्शन में मौलिक योगदान है बल्कि सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में रूसो लोकतन्त्र का पुजारी था उसने जनता की प्रभुसत्ता के विचार को फ्रांस की राज्य क्रान्ति के माध्यम से आधुनिक काल का सबसे प्रभावशाली दर्शन बनाया। उसकी **General will** (सामान्य इच्छा) जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति है। रूसो के बाद मांटेस्क्यू ने शक्तिपृथक्की करण तथा समाजवाद, एडमण्ड बर्क के व्यक्तिवाद ने लोकतन्त्रात्मक विचारधारा को और भी परिपक्व किया। बेन्थम के उपयोगितावादी सिद्धान्त के अन्तर्गत लोककल्याण कारी राज्य की धारणा को जानस्टूअर्ट मिल और रिकार्डो ने आगे बढ़ाया। रूसो का सिद्धान्त "अधिकतम लोगों के लिये अधिकतम सुख" उसे जनतन्त्र वादी, तथा प्रजातन्त्र का पोषक घोषित करता है।

रूसो के व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा सामान्य इच्छा दोनों विचारों के परिप्रेक्ष्य में आगे जाकर दो विचारधाराऐं पनपती हैं **व्यक्तिवाद** और **समाजवाद**। व्यक्तिवादी विचार धारा को विकसित करने में मांटेस्क्यू, बर्क; जान स्टूअर्ट मिल और रिकार्डो प्रमुख हैं। हीगेल ने समाजवादी विचारधारा को आगे बढ़ाया। हीगेल का द्वन्दात्मक सिद्धान्त एवं उसका विश्वात्मा सम्बन्धी दर्शन मार्क्स के साम्यवादी आन्दोलन की पृष्ठभूमि था। सामाजिक विकास क्रम में परिवार सर्वप्रथम सामाजिक व्यवस्था है जो वाद है जिसके प्रतिवाद में समाज जिसे बुर्जआ समाज कहते हैं का जन्म होता है तथा यहाँ प्रतिस्पर्धा का वातावरण उत्पन्न होता है। व्यक्तिगत संघर्ष बढ़ने पर उसको नियमित करने के लिये राज्य का प्रादुर्भाव होता है जो परिवार और समाज का सामन्जस्य (संवाद) है। इस प्रकार वाद, प्रतिवाद और संवाद की प्रक्रिया निरन्तर चलती है। हीगेल राज्य को पृथ्वी पर ईश्वर का अवतार मानता है **(March of God on Earth)** उसके अनुसार राज्य साध्य है, और व्यक्ति साधन। राज्य पृथ्वीपर विश्वात्मा का अन्तिम रूप है। "**The state also is an end in itself------It is the final embodiment of spirit on earth.**" **Herbert spencer** ने भी राज्य को व्यक्ति का विराट रूप बताया है। **State is a large individual** तथा राज्य की तुलना देहधारी मनुष्य से की थी।

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के पोषक के रूप में राज्य को केवल ये तीन कार्य विदेशी आक्रमणों से व्यक्तियों की सुरक्षा, आन्तरिक उपद्रवो से सुरक्षा तथा कानून के अनुसार किये गये समझौतो का पालन करवाना चाहिये।

हीगेल की द्वन्दात्मक पद्यति के रूप को कार्ल मार्क्स ने प्रयोग कर साम्यवादी दर्शन कहा है। वह मानते थे कि ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया द्वन्दात्मक है। हीगेल के द्वन्दावांद का आधार वैचारिक तथा आध्यात्मिक था जबकि कार्ल मार्क्स के अनुसार विचार नहीं भौतिक प्रदार्थ ही इस जगत का आधार है। यह विश्व एक भौतिक जगत है तथा ये भौतिक जगत द्वन्दात्मक पद्यति के माध्यम से अपनी पूर्णता की यात्रा पर अग्रसर है। मार्क्स के अनुसार श्रम सामाजिक जीवन का आधार है बिना श्रम के कुछ भी प्राप्त नहीं होता। श्रम द्वारा उत्पादन सामाजिक विकास की मुख्य विशेषता है। अभी तक के विचारको ने इतिहास के निर्माण में अन्य तत्वों का विश्लेषण किया था लेकिन मार्क्स ने इस महत्वपूर्ण तथ्य को लोगों के सामने रखा। उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन से मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्ध बदलते हैं। प्रारम्भ में आदिम साम्यवादी युग था आगे चलकर जब औजारों का जन्म हुआ, आग जलाना, खेती करना प्रारम्भ हुआ तब समाज दो वर्गों में बँट गया मालिक और दास। इस युग में मालिक कम थे दास ज्यादा थे। अतः दासों पर नियंत्रण के लिये राज्यसत्ता (कानून पुलिस) का जन्म हुआ। सामन्तवाद में सामन्त और किसान दो गुट बन गये। सामन्त किसानो का शोषण करने लगे ऐसी स्थिति में खेती के बाद, किसानों ने खाली समय में करघे और दस्तकारी शिल्प की चीजों के आदान-प्रदान के व्यापार को जन्म दिया और अब उद्योगपति व पूंजीपति युग का प्रारम्भ हुआ। इस समय पूंजी पति और सर्वहारा वर्ग जो वेतन भोगी मजदूर था के बीच मध्य वर्ग का उदय हुआ। समय बीतने पर मध्य वर्ग सर्वहारा वर्ग का साथ देता है और संघर्ष में पूंजीपति वर्ग का नाश हो जाता है। समाजवादी व्यवस्था का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये जो भौतिक परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं वो पूंजीपति समाज के गर्भ में छिपी रहती है। पूंजीपतिवाद के पतन के बाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायक तत्व की स्थापना होती है जिसमें पूर्ण रूप से दो लक्षण होते है। (१) यह समाज राज्यविहीन और वर्ग विहीन होगा

(२) इसमें प्रत्येक अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करे और उसे अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त हो। **Plato & Arisiotle** की भाँति राज्य को लोक कल्याणकारी संगठन मानने के स्थान पर मार्क्स ने राज्य को एक वर्ग संगठन माना है तथा इसकी उत्पत्ति का कारण वह वर्ग संघर्ष मानता है। सर्वहारावर्ग का अधिनायकवाद स्थापित होने के बाद राज्य विहीन समाज की स्थापना होगी तथा इसी स्थिति को मार्क्स ने लोकतन्त्र माना है क्यों कि सर्वहारावर्ग की व्यवस्था बहुसंख्या के हितो के लिये है। विकास क्रम में जब सब वर्गों के भेद मिट जाएँगे और सारा उत्पादन पूरे राष्ट्र के एक विशाल संघ के हाथ में संकेन्द्रित हो जायेगा तब सार्वजनिक सत्ता अपना राजनैतिक स्वरूप खो देगी या राज्य का लोप हो जायेगा।

इस प्रकार हम देखते है कि युनान और मध्य पूर्व में पुनः स्थापित प्रजातन्त्र को स्थायित्व प्रदान करने वाले सिद्धान्त १८वी १९वीं शताब्दी में योरूप में एक सशक्त दर्शन का रूप ग्रहण कर चुके थे। अपरिग्रह के सबसे सशक्त प्रचारक कार्ल मार्क्स ने जब सर्वहारा वर्ग को राज्य की सत्ता प्रदान करने की अनुशंसा की और उसके लिये अस्थायी तौर पर **Dictatorship of Politariat** नाम की राजनैतिक व्यवस्था की वकालत की, उसमें अपरिग्रह का सिद्धान्त सर्वोपरी था। प्राकृतिक एवं सामाजिक साधनों का जनसाधारण के बीच बँटवारा और कोई किसी का हिस्सा जबरदस्ती ना ले सके ये वास्तव में अपरिग्रह का आदर्श रूप चित्रित किया गया था। मार्क्स का दूसरा महत्वपूर्ण कदम था **Dictatorship of Politalriat** के बीच कोई भी मतभेद न रहे और राजकीय शासक एक मत से निर्णय लेकर शासनतन्त्र सर्वहारावर्ग के कल्याण हेतु चलावें और ये उपलब्धि केवल अनेकान्तवाद के द्वारा ही सम्भव थी। यह सही है कि इन सिद्धान्तों में से धार्मिक पुट अलग करना साम्यवादी विचारको की बहुत बड़ी भूल थी इसी के फल स्वरूप उनकी विचारधारा नैतिक मूल्यों के अभाव में १०० वर्षों में ही लड़खड़ा गयी।

राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं की सफलता की सबसे बड़ी आधार शिला है स्थायी शान्ति। अपरिग्रहवाद यदि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवहारित आचार संहिता के रूप में ग्रहण कर लिया जाये तो

निश्चित रूप से राज्यों की राजनैतिक सीमाएँ तो खतम हो ही जायेंगी साथ ही विग्रह के दौर भी हमेंशा के लिये समाप्त हो जायेगे। अनेकान्तवाद के तहद् राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय इच्छा की अभिव्यक्ति प्रजातन्त्र की सफलता का सबसे बड़ा सूचक है। यदि हम **League of Nation** से वर्तमान **U.N.O** के निर्माण में प्रतिपादित सिद्धान्तों को समझने का प्रयास करें तो महावीर का अनेकान्तवाद ही हर विचार विनिमय, चाहे वो राष्ट्रीय स्तर पर हो या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो, परिलक्षित होता है। बड़ी से बड़ी समस्याएं आती है, अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज धुंधलायां दिखायी पड़ता है लेकिन ऐसे समय में जब राजनायक बैठ कर अपनी कहते हैं दूसरों की सुनते हैं तो बड़ी-बड़ी समस्याओं के निराकरण का मार्ग मिल जाता है।

यह सत्य है कि यह कार्य शैली राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में अनादि काल में भारत में प्रतिपादित थी यह भी सही है कि भगवान महावीर इस शैली के आदि जनक नहीं थे लेकिन भगवान महावीर के पहले तथा बाद में वाममार्गी विचारधाराओं के कारण भारत की यह धरोहर लुप्त हो चुकी थी और हिंसा, परिग्रह मानव विनाश का खुला खेल-खेल रहे थे। महावीर ने इन प्राचीनतम सिद्धान्तों को पुनः स्थापित किया। कितने आश्चर्य की बात है कि महावीर के ये सिद्धान्त केवल युनान तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि काँट नात्शे हीगेंल और कार्लमार्क्स जैसे दार्शनिको ने इनको वामपंथी विचारधाराओं से जोड़ने का प्रयास किया। यह दुर्भाग्य की बात है जहां पश्चिम ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के माध्यमों से इन सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया वहीं वामपंथियों ने इन सिद्धान्तो का मर्यादित पालन के नाम पर गला घोंटा और यही सबसे बड़ा कारण है वामपंथी राष्ट्रो के पराभव का।

भगवान महावीर के समय में समाज में नरमेघ जैसे यज्ञ, जीयो और जीने दो की भावना का उपहास एवं बनाश्रम की आड़ में निरीह प्राणियों का उत्पीड़न पूरी तौर से समाज को अपने पाश में पकड़ लिया था। उन्होंने न केवल इन भयावह स्थितियों के विरुद्ध आत्मा का सर्वोपरि स्वरूप सामने रख कर संघर्ष किया और एक पुरातन विचारधारा को पुनः स्थापित किया बल्कि उस समय की राजनैतिक एवं सामाजिक

व्यवस्थाओं जिनके द्वारा समाज को इन कुरीतियों से बचाया जा सकता था उनको अप्रत्यक्ष रूप से एक सशक्त, विचारधारा तथा कार्य शैली प्रदान की। भगवान महावीर जानते थे कि भविष्य में आने वाले सुदृढ़ साम्राज्यों की सफलता इन नगरगणतन्त्रों की सफलता पर निर्भर करेगी क्योंकि चक्रवर्ती राजाओं को मर्यादित करने के लिये गणराज्य की नियन्त्रित विचारधारा ही सर्वोपरि दर्शन था।

भगवान महावीर ने स्वयं उस व्यवस्था की वकालत न करके उसके लिये एक ऐसा दर्शन, आचार संहिता एवं पारदर्शी शैली जो शत प्रतिशत अनादि भारतीय चिन्तन की देन थी उसे प्रतिपादित किया। १६० वर्ष पश्चात् चाणक्य ने जब चन्द्रगुप्त मौर्य के माध्यम से एक नये विशाल साम्राज्य का निर्माण किया तो उसमें सम्राट की जाति एक गौण प्रश्न था। सम्राट के ऊपर देशभक्त बुद्धिजीवियों का नियन्त्रण था। परिषदों में अनेकान्तवादी दृष्टिकोण जिसके माध्यम से व्यक्ति और राज्य की इच्छा की सही अभिव्यक्ति प्राप्त की जा सके, महावीर के दर्शन की देन थी।

पंच महाव्रत को सर्वांगीण स्थिति प्रदान करने वाले महावीर का अपरिग्रहवाद युनान रोम———इत्यादि देशों में राजनैतिक चिंतन का प्रमुख मुद्दा बन गया। दार्शनिक प्लेटो ने अपनी पुस्तक **Republic** में शासन कर्त्ताओं के लिये जो व्यवस्था बतायी उसके अनुसार उनका ना कोई अपना परिवार था ना कोई अपनी सम्पत्ति। लोकतन्त्र को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिये भगवान महावीर प्रदत्त भारतीय चिन्तन की ये एक महत्ती सफलता थी।

लोकतन्त्र— विश्व के राजनैतिक दर्शन के इतिहास के अवलोकन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि भगवान महावीर के पंच महाव्रत (सत्य-अहिंसा अचौर्य अपरिग्रह और बह्मचर्य) एवं राजनैतिक और सामाजिक मतभेदों को दूर करने की कुंजी अनेकान्तवाद, प्रजातन्त्र की प्रथम संस्था नगर राज्य को चलाने का सुदृढ़ आधार केवल भारत में ही नही दे सकी वरन् जहाँ-जहाँ नगर राज्यों का विकास हुआ वहाँ-वहँ जैन प्रचारकों अथवा अन्य माध्यमों से इस विचारधारा ने उन-उन देशों में अपनी सार्थकता सिद्ध की।

परोक्ष रूप में यदि देखे तो ईसाई धर्म पर जैन दर्शन का एक विलक्षण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। मार्टिन लूथर के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों की तह में ईसा के वह विचार प्रस्फुटित होते हैं जो उन्होंने तक्षशिला एवं नालन्दा के विश्व विद्यालयों में अपने विद्यार्थी जीवन एवं बाद में शिक्षक के रूप में अर्जित किये थे। लगभग १० रूसी शोध मनीषियों ने अपनी शोध के आधार पर यह सिद्ध किया है कि ईसा बरसों तक पंजाब में जैन सन्तो के सानिध्य में रहकर एक क्रान्तिकारी धार्मिक संहिता का सृजन कर रहे थे जो बाद में चलकर ईसाई धर्म के रूप में विश्व को मिली। इस धर्म ने योरूप के देशों में राजनैतिक संस्थाओं पर दीर्घगामी प्रभाव डाले और उनमें भगवान महावीर के आदि सिद्धान्तों की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

इस परिपेक्ष्य में इस्लाम की भूमिका भी काफी महत्वपूर्ण रही है। राज्यों का विस्तार करने वाला इस्लाम अपनी भौगोलिक स्थितियों के कारण प्रथम दृष्टि में कुछ अलग-थलग सा दिखायी पड़ता है परन्तु उसके मौलिक सिद्धान्तों में अपरिग्रह, ईमानदारी से कमाये हुये पैसों की प्रमुखता, खैरात, अचौर्य और सत्य का कड़े अनुसान के तहद् पालन महावीर के सिद्धान्तों से काफी नजदीक दिखायी पड़ते है। इस्लाम की न्याय पद्यति एवं सर्वोच्च स्तर पर नीति निर्धारण अनेकान्तवाद के परिचायक हैं। युद्ध के मैदानों में इस्लाम को मिलने वाली सफलता का आधार अनेकान्तवाद ही माना जाता है। जलालुद्धीन अकबर इतिहास में इस सिद्धान्त का एक ज्वलन्त उदाहरण है। जब-जब मुस्लिम शासकों ने इस सिद्धान्त का परित्याग किया जैसे कि औरंगजेब उनके पराभव की लेखनी उसी समय लिख गयी।

ये निर्विवाद सत्य है कि विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाले दोनों धर्म इसाई और इस्लाम महावीर के इन सिद्धान्तों से पूरी तरह प्रभावित थे और इन धर्मों के माध्यम से योरूप और सुदूर देशों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रजातन्त्र को स्थापित करने वाले एवं विकासित करने वाले सिद्धान्त सुचारू रूप से जड़ पकड़ सकें।

१८वीं १९वीं शताब्दी में हर युद्ध के बाद राजनीतिज्ञों ने दो दिशाओं में विश्व के कल्याण के लिये प्रयास किया। विश्व के स्रोतों का यथासम्भव समान बँटवारा हो जिससे हर राष्ट्र को उन स्रोतों का उचित लाभ मिल सके। यहाँ तक कि जब-जब किसी राष्ट्र में अकाल पड़े, महामारी आयी तब-तब दूसरे राष्ट्र उनकी सहायता के लिये आगे आये। भौतिक वाद की अन्धी दौड़ में ये ऐसे शुभ चिन्ह थे जो केवल महावीर का दर्शन ही विश्व को दे सका।

युद्धों की विभिषिका से थकी हुई दुनिया शान्ति की तलाश में छटपटाकर हाथ पैर चला रही थी। स्थानीय स्तर पर यह लगातार प्रयास किये जा रहे थे कि राष्ट्रो के प्रतिनिधि आपस में बैठ कर इसी प्रकार की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान खोजें जिनसे विश्व शान्ति को खतरा था। योरूप और अमेरिका का दर्शन जो प्लेटो और अरस्तु के दर्शन से बहुत कुछ सीख चुका था इसने आगे बढ़ कर अनेकान्तवाद का ही सहारा लिया। यदि सत्य पूछा जाये तो २६०० वर्ष पहले के भारत में जिन समस्याओं के निराकरण के लिये महावीर ने क्रान्ति का झंडा उठा कर एक शक्तिशाली विचार धारा का प्रतिपादन किया था लगभग वैसी ही समस्याएँ विश्व के अनेक राज्यों को १९वीं व २०वीं शताब्दी में घेरे हुई थी। गणतन्त्र परिषदों द्वारा मार्ग दर्शित सम्राट निरंकुश हो चुके थे, भूखे भेड़ियों की तरह एक से दूसरे पर कब्जा करने को तैयार थे। औद्योगिक क्रान्ति के नाम पर आर्थिक साम्राज्यवाद तथा व्यक्तिवाद की आड़ में व्यक्ति का शोषण चरम सीमा पर पहुंच चुका था। धर्म के कठमुल्ले नेता धर्म की आड़ में कुसंस्कारों को मान्यता देकर राजकीय सत्ता पर कब्जा करने का प्रयास कर रहे थे। ऐसे समय में समाष्टि जीवन की पुनः स्थापना एवं आपसी विरोधों को अनेकान्तवाद की सहष्णुता के दायरे में लाकर उनका निराकरण समय की उसी प्रकार आवश्यकता बन गयी जिस प्रकार २६०० वर्ष पहले जाति और वर्ण के नाम नरसंहार किये जा रहे थे, राजा निरंकुश होते जा रहे थे। धर्म की आड़ में निरीह पशुओं का बलिदान एवं राजनैतिक कुचक्रों की सृष्टि इन सभी ने महावीर के मानस को झकझोर दिया और उसका परिणाम था एक सशक्त दर्शन और एक सदाबहार शैली जो प्रजातन्त्र का प्रमुख आधार बन सके।

यह विश्व के कल्याण का एक सशक्त पहलू था कि योरूप आदि के देशों में जब इस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई तो महावीर के यह सिद्धान्त मध्यपूर्व के दार्शनिको के जरिये काफी हद तक वहाँ की मिट्टी में प्रस्फुटित हो चुके थे और इसी का परिणाम था कि प्रथम महायुद्ध के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरौ विलसन ने लीग **of Nations** की स्थापना करते समय कहा था **"No Taxation without Representation."**

इतिहास का अवलोकन यह स्पष्ट करता है कि अब्राहिम लिंकन की गुलामी के प्रति लड़ाई पर गैटेसबर्ग में दिया भाषण महावीर के सिद्धान्तों के कितने अधिक अनुरूप थे। यदि सही कहा जाये तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नही होगी कि महावीर के पश्चात् इन सिद्धान्तों की व्यवहारिक उपयोगिता एवं उनको अमली जामा पहनाने के लिंकन के प्रयास और उनकी शहादत विश्व के इतिहास में एक अद्वितीय घटना है। फिलाडेल्फिया के कन्बेन्शन में जार्ज वाशिंगटन ने यदि जनता के लिये प्रतिनिधित्व की मांग की थी तो उसका एकमात्र कारण था जनता को न्याय प्रदान करना, उसको समृद्ध बनाना और एक ऐसी राजनैतिक व्यवस्था का सृजन करना जिसमें सबको अपने विचारों की अभिव्यक्ति की आजादी हो और जो जनता की इच्छा को परिलक्षित कर सके।

लीग आफ नेशनस यदि विश्व को स्थायी शान्ति प्रदान नहीं कर सकी तो इसका सारा दोष सिद्धान्तों को नही वरन् सिद्धान्तों के क्रियान्वन को ही जाता है। महावीर ने अपने आपको राजनीति के दलदल से अलग रख कर केवल सिद्धान्तों की बात कही थी। उन सिद्धान्तों में तुष्टिकरण का कोई आधार नही था। श्रमणों के मध्य वैचारिक प्रश्नों के समाधान से लेकर जीवन के छोटे से छोटे एवं बड़े से बड़े क्षेत्र में महावीर ने पंच महाव्रत तथा अनेकान्तवाद की बात कही। उन्होंने इन सिद्धान्तों को पालन करने का निर्देश नहीं दिया बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपयोगिता बतायी। प्रथम महायुद्ध के बाद जहाँ एक ओर राजनैतिक नेताओं ने इन सिद्धान्तों की उपयोगिता को प्रधानत्व देने की बजाय जबरदस्ती मढ़ने की कोशिश की वहीं दूसरी ओर कतिपय राष्ट्रों ने अपनी सार्वभौमिक सत्ता के विस्तार के लिये

इनका दुरुपयोग किया। अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर आने के पहले इस प्रकार के सिद्धान्तों के लिये शक्तिशाली राष्ट्रो की प्रतिबद्धता अत्यन्त आवश्यक होती है। वुडरो विलसन के बाद भौगोलिक एवं अन्य कारणों से अमेरिका मुख्य विचार धारा से अलग-थलग हो गया। फ्रांस और इंग्लैण्ड के राजनैतिक नेता तुष्टिकरण के मार्ग पर चल निकले और हिटलर और मुसोलिनी ने सर्वश्रेष्ठ जाति का नारा देकर लाखों यहुदियों को मौंत के घाट सुला दिया। मार्क्स की दी गयी साम्यवादी विचारधारा जिसमें महावीर के सिद्धान्त पूरी तरह निहित थे रूस में भटक गयी। नेपोलियन के युद्ध के घाव अभी भी ताजे थे लेकिन विश्व विजय के सपने अभी पुराने नहीं पड़े थे। इन सिद्धान्तों के भ्रम जाल में पड़ते ही विश्व ने एक ऐसे युद्ध की विभिषिका देखी जो इतिहास के पृष्ठों में सदैव के लिये मानव जाति के लिये कलंक बन गया। यह हास्यास्पद है कि जहाँ महावीर के सिद्धान्त अनेकान्तवाद की आधारशिला पर राष्ट्रों में परस्पर विचार विनिमय के लिये लीग आफ नेशन्स की स्थापना की गयी, वहीं महावीर के सिद्धान्तों का केन्द्र बिन्दु प्रजातन्त्र को साम्राज्य वाद के प्रचार क़े नाम पर तिलांजलि दे दी गयी। ये विरोधाभास विश्व को कितना मंहगा पड़ा ये द्वितीय महायुद्ध के नरमेध ने सिद्ध कर दिया। इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल जैसे देश फिर से साम्राज्यवाद के प्रसार के लिये दौड़ में जुट गये और उपनिवेषों की जनता का शोषण अपने देश की ज़नता के हित में अबाध गति से जारी रखा। जर्मनी तथा अन्य पराजित राष्ट्रो ने जब इस दूमूही नीति को देखा तो वे भी इसी रास्ते पर चलने को कटिबद्ध हुये। आर्य जाति के शुद्ध खून की दुहाई देकर जर्मनी के फुहरर हि़टलर ने लाखों यहूदियों का नरसंहार किया। सन् १९४२ में बंगाल के अकाल में लाखों लोगों की जाने गयी लेकिन प्रजातन्त्र की दावेदार ब्रिटिश सरकार के कान पर जूं भी न रेंगी। इतिहास साक्षी है कि जब-जब विश्व ने महावीर के इन सिद्धान्तों की विश्व में अवहेलना की उसे कठिन परिस्थितियों का ही सामना करना पड़ा।

जैन दर्शन द्वारा प्रदत्त अनादिकाल से प्रतिबद्धित इन सिद्धान्तों की अवहेलना ने ही महाभारत के युद्ध की सृष्टि की जिसमें इन्हीं सिद्धान्तों की पुनः स्थापना के लिये श्री कृष्ण को अवतरित होना पड़ा था।

विश्व के इस घटना क्रम में एक नया सैद्धान्तिक प्रयोग महावीर के सिद्धान्तों को आधार मान कर किया जा रहा था। गांधी जी ने पंच महाव्रतों के आधार पर अनेकान्त दर्शन को अपनी पार्टी की कार्यशैली में परिवर्तित कर भारत में प्रजातन्त्र की बहाली के लिये पूर्ण अहिंसक संघर्ष प्रारम्भ किया। जहाँ एक ओर उनका संघर्ष पूर्णतयः अहिंसक था दूसरी और राष्ट्रीय आचार संहिता में सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, एवं बह्मचर्य मूलभूत आधार स्वीकार किये गये। युगों-युगों का विजेता शाश्वत सत्य एक बार फिर विजयी रहा। अंग्रेज सरकार द्वितीय महायुद्ध जीत कर भी हार चुकी थी। सुदुर पुर्व से उठता हुआ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का शंखनाद दिल्ली चलो का नारा, सीमित साधनों में समान भागेदारी तथा ईमानदारी से राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य बोध ये भारत में प्रजातन्त्र की स्थापना के लिये प्रथम सौपान थे। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब उसने इन सिद्धान्तों की प्रतिबद्धता कायम रखी है विश्व ने हमेंशा सुख और चैन की सांस ली है। आदि संस्कृति के इस दर्शन को केवल महावीर के बाद के युग में ही नही बल्कि अनादि काल से इस कसौटी पर कसा जा सकता है।

अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रुजवेल्ट तथा इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री श्री क्लीमैंन इटली ने द्वितीय महायुद्ध से यह सबक निश्चित रूप से सीखा और इस बार साम्राज्यवाद के प्रसार के लिये नहीं बल्कि खोये हुये प्रजातन्त्रों की पुनः स्थापना के लिये एवं आर्थिक विषमताओं को बढ़ाने वाले साम्राज्यवादी शोषण पर अंकुश लगाने के लिये एक स्पष्ट कल्पना **U.N.O.** के रूप में की। केवल दो हाथ चौड़ी धोती बाँधने वाले एक भारतीय फकीर का उद्बोधन वर्तमान प्रजातन्त्र की प्रमुख संस्था **House of Commons** को थपथपा कर कह रहा था कि स्थायी शान्ति केवल आदि संस्कृति के इन सिद्धान्तो का कार्यान्वन ही दे सकता है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् **House of Commons** द्वारा भारत की आजादी का प्रस्ताव स्वीकार करना महावीर के सिद्धान्तों की वर्तमानकाल की सबसे बड़ी और अभूतपूर्व विजय थी। **U.N.O.** की स्थापना के समय जो

घोषणाएं की गयी उनमें से निम्नलिखित सीधा इंगित करती है कि युद्ध की विभिषिकाओं से थके हुये विश्व ने अबकी बार महावीर के सिद्धान्तों के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता दिखाने का सही रूप में प्रयास किया था।

संयुक्त राष्ट्र सभा की द्वितीय महायुद्ध से आज तक की एक महान उपलब्धि है विश्व में प्रजातन्त्र की पुनः स्थापना। आज साम्यवाद के पंजे में कसे हुये देश स्वतन्त्र हो चुके हैं। ब्रिटिश सामाज्य जिसमें कभी सूरज नहीं डूबता था आज एक प्रकाश स्तम्भ की तरह योरूप के सामुद्रिक पटल पर टिमटिमा रहा है। छोटे और बड़े सभी उपनिवेश स्वतन्त्र हो चुके हैं। महावीर ने जिस प्रजातन्त्र की स्थापना और सुचारू रूप से चलाने के लिये विश्व को एक दर्शन व शैली प्रदान की थी वह साकार हो उठ रही है। दूसरी ओर यदि हम संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न प्रतिनिधी संस्थाओं के कार्य कलापो पर दृष्टि डाले तो निम्नलिखित संस्थाओं की प्रतिबद्धता पाँच महाव्रतों के अनुशीलन में नये आयाम स्थापित कर रही हैं। विश्व के किसी भी हिस्से में अकाल महामारी एवं प्राकृतिक आपदा का सामना करने के लिये सारे राष्ट्र कटिबद्ध है। सीमित साधनों के बावजूद **U.N.O.** का यही प्रस्ताव रहता है कि इन आपदाओं से समय रहते निपटा जाये और जन साधारण को कष्ट न हो। सत्य और अचौर्य की कसौटी पर खरे ना उतरने वाले मामले आज अन्तर्राष्ट्रीय जगत में घृणा की दृष्टि से देखे जाते है। नारी के यौन उत्पीड़न को लेकर आज सारा विश्व जागरुक है। आज विश्व में आतंकवाद और आतताई राष्ट्र के विरुद्ध सारे राष्ट्र एक ही प्रतिबद्धता से बंधे हुये है। हमने अभी हाल में कारगिल में भारतीय जवानों के अप्रतिम शौर्य के पीछे महावीर के उस दर्शन की झलक देखी है जिससे अनुप्राणित होकर इन रणबांकुरे नवयुवको ने विजय श्री का वरण किया। अन्तर्राष्ट्रीय जगत को हमारे साथ आना पड़ा जो प्रजातन्त्र के भविष्य के लिये अनिवार्य है।

कर्म की कहानी

श्री सुयश मुनि जी

शायद माता-पिता को मेरे इस निर्दोष आनन्द से ईर्ष्या आ गई हो। मुझे सुन्दर-सुन्दर कपड़ों से सजाया गया। समय-समय पर विभिन्न खाद्य-पदार्थों के स्वाद का रसावादन कराया गया। अन्य से मिलने के लिये खेलने के बहाने घर से बाहर भेजा गया। अनेक खिलौने के द्वारा संसार के अनेक पदार्थों से परिचय कराया गया। इस प्रक्रिया से मन के अनुरूप एक मित्र मंडली का संगठन बनता गया। सिनेमा-नाटक से कोई परिचय नहीं था, पर अब मुझे मित्रवर्ग के सहयोग से इन सब का परिचय होने लगा। फिर तो माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध, झूठ बोलकर, लुका छिपाकर गलत कार्यों में आगे बढ़ता गया। उसी के चक्कर में माता-पिता हितैषी को भुला दिया। स्वप्न में जीवन को डुबाता गया। उन क्षणिक़ सुखों को पाने की कामना से दिनरात पागल जैसा भटकता रहा। बस—आदर्शहीन, व्यवहारहीन, सद्भावना हीन, वासना में डुबकर जीवन को अशांत और अन्तहीन बना दिया। समस्या तैयार करके उन समस्याओं के समाधान में सम्पूर्ण जीवन नष्ट कर दिया। फिर मैं एक दिन जीवन के उस चौराहा पर भीड़ में खड़ा हो गया जहाँ सभी लोग गलत कार्य को ही सही मानते थे। वहाँ गलत कार्य करने की ही शिक्षा मिलती थी। वहाँ गलत व्यक्ति ही सार्वजनिक रूप में सम्मानित होता था।

अन्त में मेरे द्वारा ही सुख के लिये तैयार किया गया उपाय दुःख बनकर सामने आने लगा। अग्नि में घी देकर अग्नि को शांत करने जैसा प्रयत्न करने लगा।

अपने को जीवित रखने के लिये अन्य का प्राण भी नष्ट करने में कभी नहीं हिचकिचाया। मैं अधिक से अधिक धनोपार्जन करता गया फिर भी जीवन के सभी साधन जुटाने में धन कम पड़ता गया। कभी मंदिर भी गया तो वहां भी अन्याय या पाप ही किया। भगवान के सामने

भी वासना पूर्ति की कामना की। कोई सद्गुरु के पास गया तो वहां भी कामना ही सर्वोपरि थी। हे प्रभु! इस जन्म का सुन्दर जीवन इस प्रकार अनन्त में खोकर भटका दिया। अपना वास्तविक परिचय ही खो बैठा। सत्य-असत्य का भेद भूल कर सत् पदार्थ को भी असत बना दिया। स्वयं तो दुःख पाया ही अन्य को भी आत्मीय-स्वजन को भी इस रास्ते में आने के लिये मजबूर किया। धन्य है इस पाप को जिसने मेरे जीवन में तत्काल प्रभाव न दिखाकर मुझे और पाप करने का साहस बढ़ाया। एक दिन वह बात याद आ गई। "मो सम कौन कुटील खलकामी, जिसने यह तनु दोओ, ताही विसरायो, एसो निमकहरामी"

मैंने कभी उस सुख को न पाया जिसकी मेरी चिर कामना थी। अब यह शरीर ही अशक्त हो गया है। चाहने पर भी कुछ करना संभव नहीं हो पाता है। मेरे कर्मों के कारण ही प्यारी पत्नी, प्यारा पुत्र, पौत्र दुश्मन बन गया हैं। मेरी सही बात भी कोई मानने को तैयार नहीं है ठीक ही तो है ये मेरी बात क्यों मानेगें, मैंने तो जीवन में किसी की बात नहीं मानी है। स्वयं एक मक्कड़ जाल में फंस गया हूँ। स्वर्ग समान संसार को नरक में बदल दिया है। खैर अब तो भोगे बिना कोई उपाय नही बचा है फिर पछताये क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत।

मिथ्यात्व और अविरति का प्रभाव हमने उक्त घटनाओं में देखा। मिथ्यात्व और अविरति हमें किस प्रकार संसार में भ्रमित करके कर्म बन्धन कराता है। अब कर्म बन्ध का तीसरा कारण है कषाय! कषाय - कष-सार-रस, आय - आगमन-उपलब्धि।

जिससे संसाररूपी वाहन को चलाने के लिये ईधन -खूराक मिलता है उससे कषाय कहते है। कषाय को मुख्य चार भागों में विभाजित किया गया है। (क) क्रोध (ख) मान (ग) माया (घ) लोभ। ये चार कषाय हर व्यक्ति में अल्पाधिक प्रमाण में अवश्य होते हैं। वे संत हो या संसारी, मनुष्य हो या चीटी पतंग।

संतों को भी अनिच्छित कार्य होने पर क्रोध, विद्वत्ता व तपस्या में अहंकार, स्वयं का महत्व बढ़ाने के लिये माया और भक्त के प्रति लोभ

होता है। अध्यात्म के शिखर पर पहुँचे हुये संत पर भी क्रोध का प्रभाव पड़ता है यह क्रोध संत को एक सीमा के बाद असंत बना देता है।

एक इतिहासिक घटना – प्रभु मुनि सुब्रत स्वामी के शिष्य स्कन्दकाचार्य। ५०० शिष्यों के गुरु। विशिष्ट ज्ञानी। शिष्य परिवार को लेकर ग्राम, नगर, में विचरण करते हुये धर्म उपदेश देते थे। एक बार फिरते-फिरते ऐसे राज्य में पहुंच गये, जहां का मन्त्री जैन धर्म का द्वेषी था। आचार्य स्कन्दक के ऊपर राजद्रोह का आरोप लगाकर राजा के कान भर दिये। राजा ने आव-देखा न ताव, इसकी कोई जाँच किये बिना ही आचार्य सहित सभी मुनियों को मृत्युदण्ड की सजा सुना दी। इतना ही नहीं मृत्यु दण्ड भी निर्दयता पूर्वक घाणी में पीस कर देने का आदेश दिया। जैन धर्म द्रोही मन्त्री स्वयं खड़ा होकर सभी मुनियों को पीसने की व्यवस्था करवाने लगे। एक के बाद एक मुनि को निर्दयता पूर्वक घाणी में पीसता गया। वहाँ एक दर्दनाक भयंकर स्थिति खड़ी हो गई। इस दृश्य को देखकर किसी भी व्यक्ति को क्रोध या दया आना स्वाभाविक है। आचार्य श्री ने इन सभी को कर्म का ही एक रूप समझकर सभी को समतादान किया। कि आत्मा अमर है उसे कोई मार नही सकता है। इस प्रकार की भावना से सभी शुक्लध्यान में मुक्ति पूरी में पहुंचा दिये। पर इसकी भी एक सीमा थी, ४९९ शिष्यों का नश्वर शरीर नष्ट होते हुए देखते देखते समता की क्षमता नष्ट हो गई। अन्तिम जो बचा था वह बालशिष्य आचार्य श्री का अतिप्रिय शिष्य था। आचार्य श्री हत्यारों को बोले—भाई-अब मेरी सहन करने की क्षमता समाप्त हो गयी है। मौत देखना मेरे लिये दुःसह हो गया हैं। यह शिष्य मेरा अतिप्रिय है इसकी मौत मेरे सामने न हो, यह मेरी अन्तिम इच्छा है। अतएव आप मुंझे पहले इस जीवन से मुक्ति देवे। पर मंत्री को तो वही करना था, जिसमें आचार्य को अधिक से अधिक कष्ट हो। मंत्री ने आदेश दिया बालमुनि को ही प्रथम घाणी में डाला जाय। इस घटना को देखकर आचार्य श्री अपनी समता को खो बैठे। क्रोध में आग बबूला हो गये। क्रोधावस्था में मरकर आचार्य व्यन्तर बने। पूर्व भव की बात याद आते ही, जिस नगर में उनको

शिष्य परिवार के साथ मार दिया गया था उस सम्पूर्ण नगरी को आग बरसा कर नष्ट कर दिया। जो आगे चलकर इतिहास में दण्डकारण्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हाँ - कभी-कभी यह क्रोध समझदारी पूर्वक करने पर अनुशासन का कार्य करता है, पर क्रोध के साथ विवेक का सम्पूर्ण नियन्त्रण हो। यह बहुत बड़ा खतरनाक कार्य है कि क्रोध आने पर या क्रोध करने पर भी अपने विवेक को जाग्रत रखें। विवेक पूर्वक क्रोध को प्रशस्त क्रोध कहा जाता है। जैसे - माता का पुत्र के ऊपर, शिक्षक का विद्यार्थी के ऊपर, गुरू का शिष्य के ऊपर उनके हित कामना में क्रोध करना। दुष्टो को दमन के लिये, धर्म की रक्षा के लिये, कभी-कभी संसार त्यागी सन्यासी को भी क्रोध करना पड़ा हैं।

प्राचीन समय की बात है। हस्तिनापुर नाम की नगरी थी। उस राज्य का राजा महाप्रतापी पद्मोत्तर राजा था। उनके दो पुत्र थे एक विष्णुकुमार और दूसरा महापद्मकुमार। जैन धर्म के महाद्वेषी नमूची की सहायता से शत्रुराजा सिंहबल को युद्ध में हराकर उसके राज्यपर कब्जा कर लिया था। कुछ समय बाद राजा पद्मोत्तर की मृत्यु हो गयी। बड़ा भाई संसार से वैरागी होकर जैन धर्म में दीक्षा लेकर साधु बनने से महापद्म हस्तिनापुर नगरी के राजा बने। मित्र और सहयोगी नमूची को महामन्त्री बनायें। इधर विष्णुकुमार घोर तपस्या करके अनेक महालब्धियों के स्वामी बन गये। ध्यान और साधना में रत वे प्रायः एकान्त और जंगल में ही रहने लगे।

हस्तिनापुर नगरी में एक बार एक जैनाचार्य सुब्रताचार्य अपने शिष्य परिवार के साथ पधारे। पूर्व काल में वाद-विवाद में नमूचि आचार्य से पराजित होकर अपमानित हुये थे। आज वह बात नमुचि को याद आते ही बदले की भावना से उसने सत्ता का दुरुपयोग किया। कहा भी गया है कि –सत्ता और सम्पत्ति व्यक्ति का विवेक नष्ट कर देता है। महामंत्री नमूचि ने आदेश दिया कि सात दिन के अन्दर सभी जैन मुनि नगर से बाहर चले जाये। इसके बाद जो भी जैन मुनि को यहां पाया जायेगा, बन्दी बना दिया जायेगा। सुब्रताचार्य ने उन्हें समझाने का बहुत प्रयास किया, पर सभी प्रयास विफल गये। महामन्त्री भी अपने निश्चय पर डटे

रहे। अंत में आचार्य श्री ने श्रीचतुर्विध संघ और धर्म की रक्षा के लिये, महालब्धि धारी मुनि विष्णुकुमार को बुलाया। आचार्य श्री मुनि विष्णुकुमार को सभी परिस्थितियों की जानकारी देकर श्री संघ की रक्षा का भार उन्हें सौप दिया। जैन मुनि अपनी विद्या का प्रयोग स्वार्थ या चमत्कार के लिये नहीं करते, पर श्री संघ, धर्म की रक्षा के लिये कभी-कभी वे शक्ति का प्रयोग कर श्री संघ के संकट को दूर करते है। राजसभा में जाकर मुनि विष्णुकुमार ने अपने भाई राजा महापद्म से अपने रहने के लिये मात्र तीन कदम जमीन की मांग की। राजा ने अपना बड़ा भाई समझकर उन्हें तीन कदम जमीन देने को स्वीकार किया। विद्याबल से अपना रूप विशाल बनाकर दो कदम में सम्पूर्ण पृथ्वी को ढककर तीसरा कदम रखने का स्थान ना पाकर नमुची के ऊपर रखने गये। राजा महापद्म सब कुछ समझ गये। मुनि से क्षमा याँचना कर ऐसा अब नहीं करने का वचन दिये। मन्त्री ने भी अपनी भूल स्वीकार कर क्षमा मांगी। मुनि भी शांत होकर अपनी शक्ति समेट लिये। यह प्रशस्त क्रोध है। इसी प्रकार मान, माया, लोभ की भी स्थिति समझे।

जीवात्मा के साथ कर्मबन्ध के विविध कारणों को हम सविस्तार विवेचन पूर्वक समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। जिसने सम्यक दर्शन को उपलब्ध कर, सम्यग् दर्शन अर्थात् सत्य के प्रति समर्पण का भाव जिसने प्रगट कर लिया है। उसने मिथ्यात्व को नष्ट कर दिया है। नियम है जितना प्रकाश अधिक उतना ही अन्धकार कम, जो परमात्मा वीतराग की आज्ञा पूर्णरूप से पालन कर रहा है या उस सत्य के प्रति आकर्षित होकर आज्ञा पालन करने का सत्प्रयत्न कर रहा है, यथाशक्ति पालन भी कर रहा है, अविरति बन्ध से भी कुछ मुक्त हो गया है या हो रहा है, यहाँ तक पहुँचकर भी कषाय और योग के माध्यम से कर्मण वर्गणा माना है क्यों कि वे कषाय और योग इतने सुगमता से हमारे साथ मिल गये हैं कि, कभी-कभी हमें उनकी उपस्थिति का पता ही नहीं चल पाता है।

क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों की प्रवृत्ति प्रत्येक जीव में थोड़ी या अधिक किसी न किसी रूप में चालू ही रहती है। कभी ये कषाय प्रत्यक्ष होते है तो कभी अप्रत्यक्ष भी कार्य करते है। संयमी साधु,

मुनिजन भी कभी-कभी समझ बूझकर विवेक पूर्वक कषाय करते है। उन कषायों को प्रशस्त कषाय कहते हैं। क्यों कि वे कषाय क्षणिक और कार्यपूर्ण होते ही स्वयं नष्ट हो जाते है। परन्तु जो अप्रत्यक्ष कषाय होता है वह कार्य पूर्ण होने पर भी नष्ट नहीं होता है, इससे विवेक भी नष्ट हो जाता है। अप्रशस्त कषाय के उदयकाल में व्यक्ति स्वयं को भूल जाते है।

क्रोध जैसे ही मान-अभिमान व्यक्ति को शिखर से जमीन पर लाकर खड़ा कर देता है। महाज्ञानी को भी भ्रमित कर देता है। शास्त्र में लिखा है ज्ञान का विकार अहंकार है, अर्थात् कोई ज्ञानी व्यक्ति अहंकार करे तो उसको ज्ञान का विकार समझे।

स्थूलभद्र महामुनि परमज्ञानी थे। १२ वर्ष तक कोषा वैश्या के घर रहने के बाद मंत्री पिता की हत्या होने पर उन्हें मंत्री पद ग्रहण करने के लिये आमंत्रण मिला। पर इस घटना चक्र से उनमें वैराग्य की वृत्ति जग उठी और संसार त्यागी बन कर दीक्षा अंगीकार कर लिये। कोषा वैश्या को प्रतिबोध देने के लिये उसकी रंगशाला में चातुर्मास करके स्वयं काम को जीते और कोषा वैश्या को श्राविका बनायें। विशिष्ट ज्ञान प्राप्ति के लिये आचार्य भद्रबाहु के पास ज्ञानाभ्यास कर रहे थे। उस समय उनकी साध्वी बनी सात बहन उनको वंदन करने उनके पास गयी। संयोग से उस समय स्थूलभद्र मुनिजी एकान्त में ध्यान कर रहे थे। अन्य मुनि से जानकारी मिलने पर मुनि जहाँ पर ध्यानस्थ थे वहाँ वंदन करने गयीं। ध्यानस्थ स्थूली भद्रजी को अपनी बहनो को आते देख कोतूहल वश मन में अहंकार जाग उठा। बहनो को आश्चर्य चकित करने के लिये सिंह का रूप बनाकर बैठ गये। साध्वी गण निर्दिष्ट स्थान पर भाई मुनि के स्थान पर सिंह को देखकर भयभीत होकर गुरुदेव के पास आकर सारी स्थिति बतायी। आचार्य श्री ने ज्ञान से वस्तुस्थिति समझकर साध्वियों को बताया कि घबराने की बात नही है तुम लोगों ने जो सिंह देखा है, वह सिंह नहीं तुम्हारा भाई ही है। तुम्हें चमत्कार दिखाने के लिये ऐसा किया था। अब जाओ भाई का दर्शन हो जायेगा। आचार्य ने अब स्थूलभद्र मुनि को अयोग्य समझकर आगे का वाँचना (ज्ञान) देना बन्द

कर दिया। अब तक महामुनि १० पूर्व पढ़ चुके थे। श्री संघ की विशेष विनति पर आचार्य श्री स्थूलभद्र को बाकी ४ पूर्व का पाठ मूल दिये। अर्थ उन्हें नहीं मिला और परम्परा में हमेशा के लिये ४ पूर्व का ज्ञान नष्ट हो गया। इस एक अहंकार से हमारा ४ पूर्व का ज्ञान ही खोगया।

हर व्यक्ति को अभिमान का त्याग करना ही चाहिये। परन्तु स्वधर्म रक्षा के लिये, देव, गुरु, धर्म, समाज, राष्ट्र के लिये हर व्यक्ति में स्वाभिमान होना अत्यावश्यक है। स्वाभिमान के बिना व्यक्ति का अस्तित्व ही नष्ट हो जाता है। अभिमान अप्रशस्त है तो स्वाभिमान प्रशस्त है। इतिहास में ऐसे सैकड़ो प्रमाण मिलते है कि व्यक्ति ने स्वाभिमान की रक्षा के लिये समय आने पर अपने जीवन को समर्पण कर दिया है। समाज, धर्म, संस्कृति की रक्षा के लिये आहुति दे डाली। स्वाभिमान रक्षा के लिये पाटन के महामंत्री कपर्दी महान हो गये, आदिनाथ भगवान के पुत्र संसार त्याग करके साधु बन गये।

माया - माया अर्थात् करना कुछ और कहना कुछ, करनी और कथनी में भिन्नता की स्थिति को माया कहते हैं। मन, वचन, काया की अलग-अलग प्रवृत्ति को माया कहते है। माया के आचरण से व्यक्ति अपने विश्वास को ही खो बैठता है। अन्य को ठगते-ठगते स्वयं ही ठगने लगता है। माया का सेवन करने वाला जीव मर कर स्त्री रूप में या पशुरूप में जन्म लेने का कर्मण वर्गणा संग्रह करता है। निश्वार्थ किसी का अहित न करते हुये धर्म, समाज, देश की रक्षा के लिये माया का सेवन प्रशस्त माया कहलाता है।

ऐसी ही एक घटना यहाँ प्रस्तुत है जैन मुनि कभी भी माया का सेवन नही करते हैं, पर परिस्थितिवश उनको कभी-कभी करना भी पड़ता है।

समृद्धिशाली राजगृही नगरी। न्यायप्रिय शासक राजा श्रेणिक। जैन धर्मानुरागी चेलना नाम की उनकी राणी थी। जीवन के पूर्व भाग में राजा श्रेणिक जैन धर्म के विरोधी पर अपनी पत्नी के लिये या प्रजा की स्थिति को देखकर राजा को सार्वजनिक रूप से जैन धर्म का विरोध

करना संभव नहीं हो रहा था। पर पति-पत्नी में कभी-कभी अपने-अपने धर्म सम्प्रदाय की उत्कृष्टता को लेकर चर्चा हो जाती दोनो अपने धर्म को महान सिद्ध करना चाहते थे। एक दिन राजा श्रेणिक किसी प्रकार से प्रत्यक्ष प्रमाण देकर राणी को धर्म के नाम पर अपमानित करना चाहते थे। समय बीतने पर एक दिन एक जैन मुनि राजा की नगरी के बाहर उद्यान में रात्री विश्राम के लिये स्थिरता किये। राजा श्रेणिक को जानकारी मिलते ही योजना बनायी। अपनी योजनानुसार एक वैश्या को उद्यान में भेजे। पुजारी मुनि और वैश्या को एक स्थान मंदिर में बन्द कर दिया। इधर नगरी में प्रचार किया गया कि आज एक जैन मुनि वैश्या के साथ मंदिर में ठहरे हुये हैं सुबह सभी नगर वासियों के समक्ष उस दुराचारी मुनि को शिक्षा दी जायेगी। अतः आप सभी को आमन्त्रण है। राजा-रानी सहित नगरवासी मंदिर के समक्ष सुबह उपस्थित हो गये। नगरवासी उत्सुकता से जैन मुनि को देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रानी चेलना को पूर्ण विश्वास था कि जैन मुनि कभी भी ऐसा कर्म कर ही नहीं सकते है। इधर मंदिर के अन्दर महाज्ञानी मुनि सब कुछ समझ गये। वैश्या को सदुपदेश देकर धर्म मार्ग से युक्त किया। ध्यान में रहकर रात्रि बिताये। सुबह क्या होना है वे अनुमान कर चुके थे। धर्म द्वेषी राजा को शिक्षा देने के लिये वे भी उपाय सोच लिये। सुबह होने से पूर्व मंदिर में जलते दीपक से एक लंगोट रखकर सभी वस्त्र आदि उपकरण जलाकर शरीर में भस्म लगा लिये। मुनि अच्छी तरह जानते थे कि मैं कितना भी शुद्ध क्यों न हूँ पर एक वैश्या के साथ रात्रि बिताने का कलंक धर्म के लिये विशेष निन्दा का कारण बनेगा। सभी लोग यही कहेगें कि जैन मुनि वैश्या के साथ रात्रि बिताये। मुनि शरीर में भस्म लगाकर बैठ गये। सुबह मंदिर का दरवाजा खोलते ही हजारों की संख्या में जनता हो हल्ला मचा रही थी। मुनि मंदिर में पड़ा चिमटा हाथ में लेकर हर-हर महादेव-हर-हर महादेव बोलते-बोलते जनता के बीच में होते हुये जंगल की ओर चले गये। लोगों ने देखा कि जैन मुनि के स्थान पर संन्यासी था। जैन धर्म को निन्दा से बचाया गया। आगे चलकर श्रेणिक राजा जैन धर्म का महान अनुरागी बना। यह भी एक प्रकार की माया का आचरण था। पर

स्वार्थ के लिये या किसी के अहित के लिये नहीं जैन धर्म की रक्षा के लिये माया के सेवन के लिये ही मल्लीनाथ भगवान को स्त्रीरूप में (१०वाँ) जन्म लेना पड़ा था।

लोभ – परायी वस्तु पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न या अनधिकृत चेष्टा को लोभ कहते है। लोभ व्यक्ति को मर्यादाहीन, लज्जाहीन, अविवेकी बना देता है। इसको ममता, आसक्ति, मूर्च्छा भी कहते है।

सभी अनर्थ का कारण लोभ है। इसलिये पाप का बाप लोभ को माना गया है। लोभवृत्ति के कारण ही व्यक्ति अपनी सभी मर्यादा को त्याग कर के कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। लोभ का सबसे बड़ा दुर्गुण है, कठोरता, निर्दयता। लोभी व्यक्ति स्वयं को छोड़कर अन्य का कुछ सोच भी नहीं सकता है। समय आने पर लोभ माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री की हत्या करवाता है।

एक समय की बात है। एक गाँव में एक परिवार रहता था। पति-पत्नी २ पुत्र और ४ पुत्री थी। मध्यम स्थिति थी। मेहनत करके निर्वाह करते थे। दुर्भाग्य से घर का मालिक रोगग्रस्त होकर संसार से चल बसा। परिवार की छत्र छाया ही हट गयी। दोनों भाई अभी किशोर ही थे। संसार व्यवहार का कोई विशेष अनुभव तो उन्हें था नहीं। फिर माता और बहनों की जवाबदारी आने पर समय से पूर्व ही उन्हें संसार का भार उठाने में मजबूर कर दिया। युवावस्था में कामना कुछ अधिक ही होती है। अधिक धन कमाने की इच्छा से माता की आज्ञा लेकर दोनों भाई देशान्तर के लिये प्रस्थान कर गये। चलते-चलते वे निर्दिष्ट दिशा की ओर आगे बढ़ रहे थे। एक दिन एक जंगल में होकर गुजर रहे थे। रास्ते में एक संत मिले। संत बोले भाई— इस रास्ते से मत जाओ, आगे एक भयंकर पिशाचिनी है तुम्हें वह अवश्य खा जायेगी। संत जानते थे कि कि ये दोनों युवक अनुभव हीन है। और (माया) लोभ में आकर अनर्थ करेंगे। युवक संत की बात नही माने। मानते भी क्यों उन युवा हृदय ने अभी तक कोई संसार के भले-बुरे का अनुभव नहीं किया था। संत की भाषा नही समझ पाये। आगे चलने पर उन्हें दस हजार सुवर्ण मुद्रा की भरी थैली मिल गई। धन पाकर दोनों बहुत ही खुश हुये। साधु को

असत्यवादी और ठग समझकर खूब कोसे। निश्चय किया अब आगे नहीं जाना यहीं पेड़ के नीचे कुछ समय विश्राम किये। दोनों को भूख लगी थी। खाना लाने के लिये छोटे भाई को नजदीक के गांव में भेजे। एक भाई खाना लाने गया और एक भाई धन लेकर पेड़ के नीचे बैठा रहा। दोनों के मन में लोभ ने अधिकार जमा लिया। सम्पूर्ण धन को अकेले पाने के लिये एक दूसरे को मारने के लिये तैयार हो गये। खाना लेने गये हुए छोटे भाई ने मन में योजना बनायी कि खाने में बिष डालकर बड़े भाई को मार दिया जाय। स्वयं वही पर पेट भरकर खा ले और भाई को जहर मिला हुआ खाना ले जाये। इधर बड़े भाई ने भी धन को अकेला ही पाने की कामना में छोटे भाई की हत्या करना निश्चित कर लिया। दूर से भाई को आते देखकर एक पेड़ के पीछे छिप गया और पीछे से चुपचाप आकर छोटे भाई की हत्या कर दी। भाई ने सोचा अच्छा हुआ अब मैं अकेला इस धन का मालिक बन गया हूँ। जहर मिश्रित भोजन खाकर वह भी मर गया। इस प्रकार लोभ ने दोनों भाई को एक दूसरे को समझने भी नहीं दिया। धन यथावत् पड़ा रहा और दोनों भाई समाप्त हो गये। ऐसे भयंकर अनर्थकारी लोभ से हमें बचने का प्रयास करना चाहिये।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

दुःखी वीरधवल और व्यन्तरों का वार्त्तालाप

रानी पद्मावती – प्राण-नाथ! पुत्र रत्न को खोकर क्या इस हार की प्राप्ति से मुझे सन्तोष हो सकता है? मैं अपने इकलौते सद्गुणी पुत्र के बिना किस तरह जीवन धारण कर सकती हूं? मेरी बुद्धिमत्ता को धिक्कार है मैंने मूढ़ता में आकर इस हार के लिये अपने प्राण-प्यारे पुत्र को संकट में डाला, सचमुच यह मैंने वैसा ही किया जैसा कोई मूर्ख मनुष्य नीम के लिये अपने घर में लगे हुए कल्पवृक्ष को नष्ट कर देता है। प्यारे पुत्र को गँवा कर अब मैं जीवित नहीं रह सकती। इसलिये महाराज! मुझे आज्ञा दें मैं झंपापात कर के प्राण त्याग करूंगी।

देवी! मैंने तुम्हें प्रथम ही कह दिया कि कल तक धीरज धारण करो। जब लक्ष्मीपुंज हार मिल गया तो कुमार भी अवश्य आ मिलेगा। इस प्रकार रानी को धीरज देकर राजा महल में आया। लोग भी आश्चर्य करते हुए अपने-अपने स्थान पर चले गये। मलयासुन्दरी ने भी रानी के साथ राज महल में आकर भोजन कर वह शेष दिन व्यतीत किया। राज-कुमार की चिन्ता में राजा और रानी ने वह दिन और सारी रात बड़े कष्ट से पूर्ण की!

प्रातःकाल होते ही कुमार की खोज में भेजे हुए राजपुरुष चारों तरफ से जैसे गये थे वैसे ही वापिस आने लगे। धीरे-धीरे सबने वापिस आकर उदासीन हो कुमार के न मिलने का समाचार दिया। इस समाचार से राजा और रानी के हृदय में निराशा के घोर बादल छा गये। रानी पद्मावती ने झंपापात कर प्राण त्याग करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। निरुपाय हो राजा को भी वैसा ही मंजूर करना पड़ा। अब वे पर्वत शिखर से गिर कर प्राण त्याग करने के लिये समीपवर्ती अलंब नामक पहाड़ की तलहट्टी में आ पहुंचे। शहर भर की जनता हैरान थी, मलयासुन्दरी के दुःख का भी पार न था।

महाबल पर मरणान्तिक कष्ट

पृथ्वीस्थान नगर के समीप प्रचंड प्रवाह में गोला नदी बह रही है। किनारे पर धनंजय-यक्ष का मन्दिर है। मन्दिर से थोड़ी ही दूर एक विशाल घटादार बटवृक्ष है। शाखाप्रशाखाओं से विस्तार पाये हुए उस बटवृक्ष के नीचे अनेक मनुष्य और पशुगण विश्राम लेते हैं। इसी वटवृक्ष की एक मजबूत शाखा के साथ लटका कर आज से तीन दिन पहले लोह-खुरा नाम के एक चोर को राजा की आज्ञा से मरवा दिया गया था। उस चोर के नजदीक की दो शाखाओं के मध्य में एक युवा पुरुष औंधे मस्तक लटक रहा था। उसके दोनों पैर दो शाखाओं के साथ मजबूत बन्धनों से बंधे हुये थे। वह युवक अपने असह्य दुःख के कारण एक शब्द भी मुख से नहीं बोल सकता था।

उस तरफ जाने वाले कई एक राहगीर वार्तालाप करते जाते थे, कि महाराज सूरपाल तथा पद्मावती रानी पुत्र वियोग में आज झंपापात कर मरने के लिये इस समय पहाड़ की तरफ गये हैं। महाबल कुमार की चारों तरफ तलाश की गई परन्तु कहीं भी पता नहीं लगा। पुत्र विरह में आज राजकुल खतम हो रहा है। पृथ्वीस्थानपुर की प्रजा आज अनाथ हो जायेगी इत्यादि बातें करते हुये वे सब लोग उस विशाल बड़वृक्ष के नीचे आ पहुँचे इधर-उधर दृष्टि डालने से वह मृतक चोर एक शाखा के साथ लटकता हुआ उनको नजर आया। सब लोग कहने लगे आज से तीन रोज पहले राजा ने जिस चोर को सजादी थी वह यही मालूम होता है। इतने में उसके पास ही औंधे मस्तक लटका हुआ और मजबूत बन्धन से बन्धा हुआ एक युवक नजर आया। सब लोग आश्चर्य पूर्वक बोले कि यह फिर कौन? यह तो जीवित मालूम होता है बड़ी मुश्किल से श्वासोच्छ्वास ले रहा है उत्सुकता पूर्वक एक दम नजदीक जाकर सूक्ष्म नजर से देखा तो मालूम हुआ कि अरे यह तो महाबल कुमार ही है जिसके वियोग से राजा-रानी आत्मघात करने के लिये अभी ही अलंब पर्वत की तरफ गये हैं। दौड़ो-दौड़ो राजारानी को खबर दो और उनको बचाओ। जल्दी करों नहीं तो राजा रानी पर्वत से झंपापात कर देंगे। झंपापात की तैयारी हो ही रही थी इतने में वे सब लोग दौड़ते-दौड़ते अलंब पहाड़ पर जा पहुंचे। महाराजा और महारानी को खबर दी कि महाबल कुमार तो उस बट वृक्ष

की शाखा के मजबूत बन्धनों से बन्धा हुआ औंधे मस्तक लटक रहा है। बड़ी मुश्किल से श्वासोंच्छवास ले रहा है। अभी हम देख कर आये है। यह खबर सुनते ही राजा रानी तथा मलयासुन्दरी वगैरह सब लोग दौड़ते-दौड़ते उस वट-वृक्ष की तरफ गये जहाँ महाबल कुमार को उसी हालत में देखकर सब का हृदय भर आया राजा ने तुरन्त सुतार को बुलवा कर बड़ की शाखें कटवाई और बड़ी हिफाजत से कुमार को नीचे उतारा। अत्यन्त पीड़ा के कारण कुमार बोलने में असमर्थ था परन्तु अनेक उपचारों के पश्चात कुमार कुछ होश में आया।

कुमार को गोद में लेकर राजा आंखों से आँसू टपकाता हुआ बोला-बेटा तेरी यह दशा कैसे हुई? मेरे राज्य-बल और भुजाबल को धिक्कार है मैं राजा होकर भी बेटा आज तेरी यह दशा? थोड़ी देर बाद कुछ विशेष होश में आकर महाबल ने अपने नेत्र खोले। पद्मावती रानी भी आंखों से आंसू बरसाती हुई पुत्र की तरफ देखकर बोली बेटा मेरे जैसी दुर्भागिनी माता इस दुनिया में बहुत कम होगी। श्रृंगार के क्षणिक सुख के लिये तुझ को ऐसी भयंकर विपत्ति में डाला। बेटा इतने रोज तू कहां था? ऐसी भयंकर दशा कैसे हुई? किस पापी ने तुझको यहां बांधौ? यह सब हकीकत सुनने के लिये हमें आतुरता हो रही है।

महाबल कुमार को किसी तरह की चोट तो लगी ही न थी। सिर्फ बन्धन और उल्टे मस्तक से लटकने के कारण अत्यंत दुःख सहना पड़ा। अब वे दोनों कारण दूर होने से धीरे-धीरे वह विशेष स्वस्थ होने लगा। सर्वथा शान्ति पाकर वह धीरे से बैठ गया और चारों ओर नजर घुमा कर देखने लगा। पास में बैठी हुई मलयासुन्दरी पर जब उसकी दृष्टि पड़ी तब अकस्मात् उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी। अब वह माता-पिता के आग्रह से अपना विचित्र वृतान्त सुनाने लगा।

उस दिन मध्य रात्रि के समय महल में एक हाथ देखने में आया था। वहां से लेकर आधी रात को मलयासुन्दरी को केलों के बगीचे में अकेली छोड़ एक औरत के रोने का शब्द सुन उसका कष्ट दूर करने की भावना से उस शब्द के अनुसार जंगल में गया था, वहां तक का सारा वृतान्त उसने कह सुनाया।

रूदन करती स्त्री के शब्दानुसार आगे जाते हुये मंत्र साधन करने की सर्व तैयारी किये बैठा हुआ एक योगी देखने में आया। मुझे देखकर उसने अपना काम छोड़ दिया और सम्मान देकर विनय पूर्वक वह मेरे पास याचना करने लगा कि हे कुमार! आप परोपकार करने में प्रवीण हैं। मेरे पुण्योदय से ही आप इस समय अकस्मात् यहां आ पहुंचे हैं। मैंने एक महामन्त्र सिद्ध करना प्रारम्भ किया है। वह मन्त्र सिद्ध होने पर सुवर्ण-पुरुष की सिद्धि होगी। मैंने सर्व सामग्री तैयार कर रक्खी है। परन्तु उत्तर –साधक के अभाव से अटक रहा हूं। इसलिये कुछ देर के वास्ते आप मेरे पास रह कर उत्तर-साधक बनें, जिससे आपकी सहायता से मेरी मंत्र सिद्धि हो।

पिताजी! योगी की प्रार्थना से मुझे दया आ गई। इसलिये उसकी प्रार्थना मंजूर कर और उसके कथनानुसार हाथ में खड्ग लेकर मैं उसका उत्तर-साधक बना। योगी ने कहा - हे वीर-पुरुष! जहाँ पर यह स्त्री रूदन कर रही है उस बड़ की शाखा से बँधा हुआ अक्षतअंग वाले एक चोर का मृतक शरीर है। उसे आप यहां ले आवें।

मैं तलवार हाथ में लिये बड़ के नीचे पहुँचा। वहां चोर के मुरदे से नीचे जमीन पर बैठी हुई रूदन करती मुझे एक स्त्री देखने में आई। मैंने उससे पूछा - भद्रे! तू कौन है? किस लिये करुण स्वर से रुदन करती है? और ऐसी भयंकर रात्रि में तुझे एकाकी श्मशान में आने का क्या कारण? मेरी बात सुनकर वह निश्चल दृष्टि से मेरे सम्मुख देखती हुई बोली-सत्पुरुष! मैं मंदभाग्या अपने दुःख की तुम्हें क्या बात सुनाऊं? इस बड़ की शाखा से जो पुरुष लटकाया हुआ है वह अलंब पर्वत की गुफा में रहनें वाला और नगर को लूटने वाला लोहखुर नामक चोर है। आज से दो दिन पहले राजपुरुषों ने छल प्रपंच से उसे पकड़ कर राजा के पास हाजिर किया। राजा ने इसे क्रोध में आकर इस बड़ की शाखा में बँधवा कर मरवा डाला। मैं उसकी प्रिय-स्त्री हूँ। जिस दिन इसकी मृत्यु हुई उस दिन ही सुबह मैं इसे मिली थी और पत्नी होकर रही थी। थोड़े ही समय में इसने मुझसे प्रेम किया था वह अभी तक मेरे हृदय में खटकता है। सत्पुरुष! आप कोई ऐसा उपाय करें जिससे मैं इसके मुख पर चंदन का विलेपन करूँ।

उस स्त्री के करुणाजनक बचनों से मेरा हृदय-द्रवित हो गया। मैंने उसे कहा-तू मेरे कंधों पर चढ़कर तुझे उचित लगे वैसा कर। वह स्त्री उत्कंठा पूर्वक मेरे कंधों पर चढ़ कर, उस शव की गर्दन में हाथ डाल कर, ज्यों उसका आलिंगन करने लगी, त्योंही उस मृतक ने अकस्मात् अपने दांतों से उसकी नासिका पकड़ ली। वह दुःख से रूदन करती हुई कांपने लगी। जब उसने नासिका छुड़ाने के लिये पीछे को जोर लगाया तब मजबूत पकड़ी हुई होने के कारण वह मुर्दे के मुख में ही टूट गई। यह आश्चर्य देख मुझे हँसी आ गयी। क्यों कि जिस चोर के प्रेम के लिये वह स्त्री रोती थी और जिसे आलिंगन करने के लिये अधिक उत्कंठित थी उसी चोर के मृतक ने उसका नाक कतर लिया।

मुझे हँसता देख अकस्मात् उस मृतक के मुख से यह शब्द निकले-महाबल मेरा चरित्र देख कर तू किस लिये हँसता है? कुछ समय के बाद तू भी मेरे समान इसी बड़की शाखा पर लटकाया जायेगा, अगली रात्रि में ही तेरे ऊँचे पैर, और नीचा मस्तक करके तुझे यहां पर बांधा जायेगा।

पिताजी! उसके यह शब्द सुनकर निर्भीक होने पर भी मेरे हृदय में कुछ भय पैदा हुआ। महाबल के मुख से यह कथन सुन वहाँ पर बैठे हुये राजा आदि तमाम लोग विस्मय पाकर बोल उठे-कुमार! बड़ा आश्चर्य है, क्या कभी मुर्दे भी कुछ बोलते हैं? पिता की तरफ देख कुमार बोला-पिताजी! आपका कहना सच है, मुरदा नहीं बोल सकता, परन्तु मुरदे के मुख में प्रवेश कर कोई व्यंतर आदि देवही बोल सकता है। मैं धैर्यवान था, तथापि देव वाक्य मिथ्या नहीं होता यह जानकर क्षोभित हुआ।

कांपती हुई स्त्री मेरे स्कन्धों से नीचे उतरी, उसने मेरा नाम स्थान पूछा, मैंने भी अपना नाम स्थान सत्य बतला दिया। इससे उसको मुझपर कुछ विशेष विश्वास हुआ हो ऐसा मालूम हुआ। जाते समय वह स्त्री मुझ से बोली; कुमार! जब मेरी नासिका अच्छी हो जायगी तब मैं आपके पास आकर इस चोर का दबाया हुआ धनादि बतलाऊंगी।

उसके चले जाने पर मन को दृढ़ कर मैं बड़वृक्ष पर चढ़ा। चोर के मुरदे को बन्धन से छोड़कर जमीन पर गिरा कर मैं नीचे उतरा। परन्तु इतने ही में वह मुरदा उछल कर फिर वापिस शाखा से जा बंधा। मुझे

फिर से बड़ पर चढ़ना पड़ा। मैं समझ गया कि यह कुछ दैवी चमत्कार है, अन्यथा जमीन पर पड़ा हुआ मुरदा स्वयं उठकर ऊपर नहीं जा सकता। ऐसी परिस्थिति में इस मुरदे को योगी के पास किस तरह ले जाया जा सकता है? मैंने एक उपाय सोच कर उस मृतक को बन्धन से छोड़ उसके केशों को पकड़ कर मैं उसके साथ ही नीचे उतरा और उसे पीठ पर लाद कर, योगी के पास लाकर रख दिया।

महाबल कुमार की विचित्र घटना सुनते हुए श्रोताओं को कभी आश्चर्य, कभी शोक, कभी हास्य, कभी भय से कंपन, कभी आनन्द और कभी दुःख का अनुभव होता था।

इस तरह अनेक रसों का अनुभव करते हुए लोगों को आगे क्या हुआ होगा? यह जानने के लिये एकाग्र मन से उत्सुकता हो रही थी।

महाबल बोला–पिताजी! योगी ने उस मुरदे को स्नान करा कर चन्दनादि के रस से उसका विलेपन किया। फिर एक बड़ा अग्निकुंड बनाकर उसमें अंगारे प्रज्वलित करके उसके पास उस मुरदे को रख कर मुझे उत्तर साधक के तौर पर खड़ा रक्खा। इधर योगी ने पद्मासन लगाकर, आँखे मींच एकाग्र चित्त से जाप जपना शुरू किया। जाप जपते हुये सुबह होने आया, परन्तु वह मृतक मंत्र प्रभाव से उठ कर अग्निकुंड में न पड़ा। यह देख निराश हो योगी जाप जपने में शिथिल हो गया। इतने में वह मुरदा भयंकर अटट्टहास्य करता हुआ आकाश मार्ग से उड़ कर पहले के जैसे उसी बड़ की शाखा पर जा लटका।

योगी बोला–राजकुमार! मालूम होता है मंत्र साधन में कहीं मुझ से भूल हुई है। इसी कारण मंत्र सिद्ध नहीं हुआ और मृतक भी उड़ कर चला गया। अब आगामी रात्रि में फिर से मंत्रसाधन करना पड़ेगा। इसलिये मुझ पर कृपाकर आने वाली रात्रि तक आप यहां ही ठहरें। परोपकारी राजकुमार आप की सहायता बिना मेरी मंत्र सिद्धि अशक्य है। मुझे पूर्ण विश्वास है आप मेरी इस प्रार्थना को अवश्य ही मंजूर करेंगे। योगी के अत्यन्त आग्रह से और कुछ परोपकार की प्रेरणा के कारण अपनी परिस्थिति को भूलकर दूसरी रात में भी उसकी मंत्रसिद्धि में उसका उत्तर – साधक बनना मैंने मंजूर कर लिया।

भय के कारण योगी मुझ से बोला – कुमार! आप को मेरे पास रहा हुआ देख राजपुरुष या अन्य कोई मनुष्य यह शंका करेगा कि इस योगी ने कुमार को किसी छल प्रपंच से अपने स्वाधीन किया हुआ है। अतः इसे मारकर राजकुमार को छुड़ाले, अन्यथा कुमार को साथ लेकर यह योगी अन्यत्र कहीं चला जायगा। इत्यादि कई कारणों से मुझपर आपत्ति आने की सम्भावना) है। इसलिये यदि तुम्हारी मर्जी हो तो सूर्य अस्त तक विद्याबल से मैं तुम्हारा रूप परिवर्तित कर दूं।

पिताजी! मैंने योगी का कथन स्वीकार किया, मेरे पास से यह लक्ष्मीपुंज हार न चला जाय यह सोचकर मैंने उसे अपने मुख में डाल लिया। योगी ने जंगल में से एक जड़ी लाकर उसे मंत्रित कर मेरे मस्तक पर उसका तिलक किया, उसके प्रभाव से काजल से भी अधिक काला और देखने मात्र से भयंकर रूप वाला मैं एक दीर्घकाय सर्प बन गया। मुझे रहने के लिये नजदीक में ही उसने एक गुफा बतलाकर वह स्वयं किसी कार्य के लिये अन्यत्र चला गया।

पवन का पान करते हुये जब मैं दुपहरी में उस गुफा में समय बिता रहा था तब सर्प की खोज करते हुये वहां पर कई एक गारुडिये आ पहुंचे। उन्होंने मंत्रबल से मुझे स्तंभित कर दिया और पकड़ कर एक घड़े में डाल दिया। और यक्ष के मन्दिर में आप के पास ला रक्खा। आप ने उस नवीन पुरुष को दिव्य करने के लिये (परीक्षा देने के लिये) आज्ञा दी। उसने भी निर्भीक हो मुझे पकड़ कर घड़े से बाहर निकाला; उसे देखकर मैंने पहचान लिया, इसलिये अपने मुख में से निकाल कर मैंने उसके गले में हार डाल दिया। फिर वह पुरुष साक्षात् स्त्री बन गई। उस वक्त भयभीत होकर आपलोगों ने धूप, पुष्प से सांप की पूजा की और उसे दूध पिलाया। फिर आप ने उस पर्वत की उसी गुफा में छुड़वा दिया। ये तमाम बातें आप सब को मालूम ही हैं।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Saraní, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91(33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design, Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

**Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वेदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'STHE ONLYTRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPEDTO MANUFACTURE 132 KV CLASSTRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1. Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3-6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7-8)		150.00
Vol -4	(satakas 9-11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
(It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani — Price Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani. — Price: Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira — Price: Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat, — Price: Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani Pancadasi. — Price: Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me. — Price: Rs. 30.00

Bengali:

14. Ganesh Lalwani-Atimukta, — Price: Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita. — Price:Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha- Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma. — Price.Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay- Prasnottare Jaina-dharma — Price:Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 10 TITTHAYARA January 2001
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225